Skill Development Programme

For Answer Writing

Ethics (Model Answer)

DATE : 24-July-2018 **TIME : 03:30 pm**

मुख्य परीक्षा

प्रश्न- **नीचे दी गई शब्दावलियों पर विचार करें तथा प्रत्येक की 50 शब्दों में परिभाषा लिखें।**

Consider the following terms and define every terms in 50 words.

1. **तथ्य और मूल्य (Fact and Value)**
2. **साधन और साध्य (Means and ends)**
3. **जैविक मूल्य (Biological Value)**
4. **आर्थिक मूल्य (Economic Value)**
5. **सुखवादी मूल्य (Utilitarian Value)**

MODEL ANSWER

उत्तर- निम्नवत् हैं-

तथ्य और मूल्य-

- तथ्य वह है जो सभी परिस्थितियों में समान होता तथा जिसे मानव द्वारा बदला नहीं जा सकता। मनुष्य केवल आचरण में तथ्य से संबंध स्थापित कब सकता है। अत: नैतिकता परिक्षण में तथ्य की भूमिका नहीं होती है।
- मनुष्य अपने स्वभाव के अनुसार सकारात्मक तथा नाकारात्मक मूल्यों से जुड़ता है। यह मूल्यों से जुड़ाव व्यक्ति के नैतिकता परिक्षण के मानदण्ड उपलब्ध कराते है। अत: नैतिकता परीक्षण में मूल्यों की अहम भूमिका है।

साधन और साध्य-

- साधन वह है जिसका अनुसरण कर किसी निश्चित उद्देश्य को प्राप्त किया जाता है, जबकि साध्य वह है जिसकी प्राप्ति के लिए साधन का प्रयोग किया जाता है।
- नीतिशास्त्र में साधन और साध्य विद्वानों के मध्य हमेशा विवाद का विषय रहा है। कुछ विचारक साध्य की पवित्रता पर, तो कुछ कोई साधन की पवित्रता पर बल देते हैं, जबकि गाँधी जी जैसे विचारक साध्य और साधन दोनें की पवित्रता पर बल देते है, परन्तु चार्वाक तथा चाणक्य जैसे दार्शनिक केवल साध्य की पवित्रता पर बल देते है।

जैविक मूल्य-

- मनुष्य एक ऐसा जैविक प्राणी है, जिसका सामाजिकरण हुआ है। अत: इसके कुछ मूल्य भी है, जो समाज में स्थिरता और स्थायित्व बनाएं रखने सहायक है। मनुष्य की जैविक आवश्यकताएं उसके विकास के साथ बदलती रहती है। इस जैविक आवश्यकताओं से जुड़े सुख जैविक मूल्य कहलाता है। जैसे- भोजन, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य, शारिरिक साधना तथा आराम के साधन इत्यादि। जिनका समय और पारिस्थिति के अनुसार बदलना स्वभाविक है।

आर्थिक मूल्य-

- किसी विषय, वस्तु या व्यक्ति की भौतिक उपयोगिकता और बाजार की माँग के अनुसार महत्व देना आर्थिक मूल्य कहलाता है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि कोई विषय या वस्तु भौतिक आवश्यकता की पूर्ति करता है, तभि वह महत्वपूर्ण है तथा उसका निश्चित आर्थिक मूल्य है। इस संदर्भ में जब व्यक्ति आवश्यकताओं की पूर्ति हेतू बाजार का रूख करता है। ऐसे में एक व्यक्ति उपभोक्ता या क्रेता और विक्रेता का संबंध स्थापित होता है, जिसे आर्थिक मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है।

सुखवादी मूल्य-

- मानव जीवन की प्राथमिकताओं में शामिल सुख उन सभी विषय या वस्तु से जुड़ा है, जिससे सुख की प्राप्ति होती है, दुसरे शब्दों में वह सभी संसाधन या वस्तु जो मानव को सुख प्राप्ति में मदद करते है। वह सभी व्यक्ति मनुष्य के लिए सुखायी मूल्य कहलाते है। यह सुखवादी अवधारणा विलासीता से पूर्णत: अलग संकल्पना है, क्योंकि विलासिता एक तुष्क संकल्पना है, जबकि सुखवाद आत्मसंतुष्टि के भाव पर निर्भर है, जो व्यक्ति को आत्म संतुष्टि के भाव से जोड़ता है।

* * *